Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (T.Y.B.A)

Subject: Hindi

Paper Code: HND - 105

Paper Title: भारतीय साहित्य

Unit: Unit II

Module Name: महाश्वेता देवी – भीषण युद्ध के बाद (बंगला)

Module No: 04

Name of the Presenter: Ms. Ulka Umesh Kalekar

Notes:

कथानक:

'भीषण युद्ध के बाद' कहानी महाश्वेता देवी द्वारा लिखित बंगला भाषा की कहानी है। यह कहानी आदिवासी विमर्श पर आधारित है। पतित जो इस कहानी का मुख्य पात्र है उसके माध्यम से आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष एवं तथाकथित उच्च वर्गीय लोगों की मानसिकता को चित्रित किया गया है। पतित केवल 10 वर्ष का लड़का है जो अपने माता-पिता के गुजरने के बाद अपने दादा मतिराम के साथ रहता है। कम आयु में ही उसे घर के हालात और दादा की बीमारी के कारण पढ़ाई छोड़ कर बाबू लोगों के घर का काम तथा उनके मवेशियों को चराने का कार्य करना पड़ता है। उसके लिए नीला आसमान ही उसका छत है। काम से थक

हार कर वह अपने टूटे हुए घर में आराम करता है सूरज के उठने से पहले उठकर पतित अपने काम में लग जाता है काम में जाते समय रास्ते में वह पेड़ों से बातें करते जाता है। चीजें संजोए हुए लकडियां आदि बटोरते हुए जाता है।

अपना कार्य पूरा करने के बाद बाबू लोगों से जो कुछ भी मिलता है उसमें पतित और मतिराम अपना निर्वाह करते हैं। पतित के मां-बाप सहित छत्तीस आदमीयों को पुलीस पकडकर ले गयी थी। सालों से जिस जमीन पर वे खेती करते थे बिना उन्हें खबर किए उस जमीन को बाबू ने किसी दूसरे व्यक्ति को भेच दिया था। नए मालिक ने जब इन लोगों को अपनी जमीन पर धान रोपते देखा तो उसने पुलीस में शिकायत कर दी। शिकायत के बाद पुलीस पतित के साथ बाकी लोगों को भी अपने साथ ले गये। वापसी में किसी मेले में सडा खाना खाकर हैजे से पतित के मां-बाप की मृत्यु गयी और पतित अनाथ हो गया। जब सुबह सुबह उठकर तैयार होकर अपना झोला उठाए काम पर जाता है तो उसके रास्ते में वह बेसीक प्राइमरी स्कूल के मास्टर को महाभारत के युद्ध की कहानियां सुनाते हुए सुनता है। पतित काम में व्यस्त होने की वजह से कभी भी पूरी कहानी नहीं सुन पाता लेकिन वह केवल युद्ध का वर्णन ही सुनता है। कहानी का कुछ अंश सुनकर पतित आगे बढ़ता है और वह भी पेड़ों से भीषण युद्ध की बात करता है एक दिन मास्टर जी पतित को देखते हैं और उन्हें पतित के हालात के बारे में पता चलता है कि किस प्रकार पति के दादाजी ना चाहते हुए भी अतीत को चरवाहे का कार्य करने भेजना पड़ता है। मास्टर जी अतीत को मुंडा जाति के बिरसा भगवान के इतिहास

के बारे में बताते हैं कि उन्होंने भी ऐसे ही समाज से युद्ध किया था और मुंडा जाति के लिए बहुत कार्य किए थे बिरसा भगवान का इतिहास सुनकर पतित उससे बहुत प्रभावित होता है और शिक्षा ग्रहण करना चाहता है शिक्षा ग्रहण के संबंध में जब पतित मतिराम से बात करता है तो मतिराम उसकी बात को टालने लगता है और कहता है कि हमारे हालातों की वजह से हम शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते लेकिन पतित निश्चय कर चुका होता है कि उसे पढ़ना है। पतीत पढ़ाई करेगा यह बात जब बाबू को पता चलती है तो वह अपमानजनक बातों का प्रयोग करते हुए कहता है कि मुंडा जाति के लोगों के नसीब में पढ़ाई नहीं बल्कि बाबू लोगों की मजदूरी करना है वह कहता है कि मुंडा जाति के लोग मनुष्य नहीं बल्कि जंगली भूत है। जंगली भूत का संबोधन सुनकर पतित की छाती आवेग से भर जाती है। बाबू के ऐसे बर्ताव से पतित काफी प्रभावित होता है और वह अपने दादा से सवाल करता है? कि क्या सच में हम जंगली भूत है? और पढ़ाई करने की अपनी इच्छा को जाहिर करता है तब उसके दादा उसे समाज की सभा में पंचों द्वारा का फैसला लिया जाएगा कहते हैं। दूसरे दिन जब सवेरे पतित तौर मतिराम सभा पहुंचते हैं तो पगड़ी पहने पंच को देखकर पतित को विरसा भगवान की याद आ जाती है और वह जोर-जोर से बिरसा भगवान की जयजयकार करने लगता है उसके साथ समाज के अन्य लोग भी जोर जोर से जयजय्कार करने लगते जिस प्रकार से विरसा भगवान ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर अत्याचार के खिलाफ युद्ध करके लोगों के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया वैसे ही पतित भी अपने जीवन के भीषण युद्ध के खिलाफ लडता है। और अपने जाति के लोगों के लिए एक

उदाहरण प्रस्तुत करता है। पतित अपने जीवन में चल रहे युद्ध का सामना करता है और विजय प्राप्त करता है। आदिवासी लोगों के प्रति हो रहे गलत व्यवहार का विरोध इस कहानी में दिखाई देता है। जिस दिन से पतित समाज सभा में गया उस दिन से उसने बाबू के घर जाना छोड दिया। कुछ दिनों तक जब पतित काम पर नहीं जाता तो बाबू से ढूँढने पहुंचता है। भविष्य का हवाला देकर मतिराम को दबाने एवं डराने की कोशिश करता है। लेकिन मतिराम उसके सामने सक्षम रूप में खड़ा रहता है और तथाकथित उच्च बाबू लोगों के अत्याचारों और भेदभाव का प्रतिकार करता है। वही पतित जो कहानियां बाहर से सुनता था वही भीषण युद्ध की कहानियों का वह विद्यार्थी के रूप में सुनता है और घर पर आकर पेड़ों से व भीषण युद्ध की बात करता है लेकिन वह इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ है कि उसने अपने जीवन में चल रहे भीषण युद्ध में जीत हासिल कर ली है।

'भीषण युद्ध के बाद' कहानी के पात्र:

मुख्य पात्र:

- पतित

सहायक पात्र/ गौण पात्र:

- मतिराम
- मास्टर
- बाबू
- सुबलसिंह

- आलोमणि

'भीषण युद्ध के बाद' कहानी का परिवेश:

यह कहानी आर्थिक दृष्टि और मानसिकता से हिन समझने जानेवाली आदिवसी जाति मुंडा जाती का चित्रण इस कहानी में हुआ है। गरीबी और भूखमरी में पिसते आदिवासी समाज के लोग किस तरह अपनी इच्छाओं को मन में दबाकर मेहनत करते है। किस तरह कम आयु में ही उनका जीवन संघर्ष की शूरूवात होती है इस सभी बातों को कहानी में बडे प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। कहानी मूल रूप में आदिवासी सामाज के जीवन संघर्षों के एक पक्ष को हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

भीषण युद्ध के बाद' कहानी में चित्रित समस्याएं:

इस कहानी में समाजिक समस्या , आर्थिक समस्या , भेदभाव आदि को प्रस्तुत किया गया है। तत्कालीन समाज के परिवेश एवं परिस्थितियों का सजीव चित्रण इस कहानी में हूआ है।

भीषण युद्ध के बाद' कहानी का उद्देश्य:

इस कहानी के पीछे का मूल उद्देश्य चित्रित आदिवासी सामाज की विडम्बनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करना है। साथ ही यह कहानी सकारात्मक दृष्टि से आगे बढती है और उन सामाजिक विषमताओं को तोड देती है।

'भीषण युद्ध के बाद' कहानी के शीर्षक की सार्थकता:

यह शीर्षक इस काहानी के लिए स्सर्थक प्रतित होता है क्योंकि इस कहानी के मूल में समाज के द्वारा बनायी गयी सिमाओं एवं बाह्याडम्बर के खिलाफ पतित के संघर्षों को चित्रित किया गया है। पतित भी अपने जीवन के भीषण युद्ध से लडता है और विजय प्राप्त करता है।